

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण
गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

- साधना ज्ञान में रोचकता की त्रिवेणी: अनूठी साधनाएं
- आकस्मिक धन प्राप्ति
- सम्मोहन • रोग निवारण
- ऋण मुक्ति • पौरुष प्राप्ति
- आयुर्वेद • ज्योतिष द्वारा समस्या निवारण



साथ ही प्रत्येक वार्षिक सदस्य को उपहार में देते हैं कोई एक दुर्लभ यंत्र... सर्वथा निःशुल्क उसके घर में या व्यापार स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- डाक व्यय १८/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन-०२६१-३२२०६

संरक्षक : डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

जगदम्बा

साधना



अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर

रहस्य रोमांच
जीवन को झकझोर कर रख देने वाली
पुस्तक श्रृंखला



एस-सीरिज

में उपलब्ध है

अद्भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें

प्रथम सीरिज

- . तांत्रिक त्रिजटा अघोरी
- . भुवनेश्वरी साधना
- . अप्सरा साधना सिद्धि
- . सिद्धाश्रम
- . मैं बाहें फैलाए खड़ा हूँ
- . हंसा! उड़हूँ गगन की ओर

प्रथम सीरिज ३०/- सेट
द्वितीय सीरिज ४०/- सेट

द्वितीय सीरिज

- . सौन्दर्य
- . तारा साधना
- . जगदम्बा साधना
- . तंत्र साधनाएं
- . स्वर्ण सिद्धि
- . उर्वशी साधना
- . शिव साधना
- . हिप्नोटिज्म

अरविन्द प्रकाशन,

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.)

टेली-०२६९-३२२०६

जगदम्बा साधना

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००९

फोन: ०२६९-३२२०६

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००९, फोन: ०२६९-३२२०६
९६६३
संस्करण : १६६३
मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)
मुद्रक : ताज प्रेस, ए.-३५/४, मायापुरी, दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साधार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से ग्रामांगिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आधुनिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या अलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पुस्तिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे। ★

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	रूपं देहि जयं देहि	०६
२.	दुर्गा सप्तशती से सम्बन्धित गोपनीय तथ्य	२२
३.	दुर्गा सिद्धि: सम्पुट मंत्र	३४
४.	देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	४२

एस-सीरिज

दो शब्द

भारतीय ज्ञान-विज्ञान अपनी श्रेष्ठता और गहनता के कारण विश्व-विख्यात रहा, और भारतीय विद्याओं की महत्ता आज के वैज्ञानिक युग में भी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट हो रही है किंतु यह खेद का विषय है कि यही ज्ञान-विज्ञान अपनी ही धरती पर उपेक्षित और व्यंग की दृष्टि से देखा जाता है, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की दुरुहता भी एक प्रमुख कारण रही है क्योंकि इसे अपनी ही सम्पत्ति बनाए रखने के प्रयास में न केवल तोड़-मरोड़ की गई अपितु यह नीरस, जटिल और अस्पष्ट भी हो गया तथा समाज ऐसे साहित्य को भय-मिश्रित जिज्ञासा से देखने लग गया।

इस खेद-जनक स्थिति का समापन करने के लिए हमने एक प्रयास किया कि ज्ञान और साधना की सरस ढंग से प्रस्तुति हो और अरविंद प्रकाशन के द्वारा "एस सीरीज" में रोचक, तथ्यपरक व ज्ञान-वर्धक साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया।

इसके प्रथम सेट के अंतर्गत छह पुस्तकें प्रकाशित की गईं- **तांत्रिक त्रिजटा अघोरी, भुवनेश्वरी साधना, हंसा उड़हूँ गगन की ओर, मैं बांहे फैलाए खड़ा हूँ, सिद्धाश्रम, एवं अप्सरा साधना एवं सिद्धि**। इस सेट की प्रत्येक पुस्तक अपने ढंग की विशिष्ट व रोचक रही। उदाहरण के लिए पाठक वर्ग ने पहली बार ही त्रिजटा अघोरी जैसे प्रबल व्यक्तित्व का परिचय पाया और 'सिद्धाश्रम' के नाम से विख्यात सिद्ध स्थली की प्रामाणिक जानकारी ली।

पाठक वर्ग ने इस सेट का उत्साहपूर्ण ढंग से स्वागत किया और साधनात्मक साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त जड़ता और नीरसता समाप्त करने का हमारा प्रयास सफल रहा। इन सभी पुस्तकों का आधार पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त सूत्र एवं उनके गृहस्थ व सन्यस्त शिष्यों के प्रामाणिक अनुभव रहे। अपने-आप में मौलिक व अनुभूत तथ्यों पर आधारित होने के कारण ही ये पुस्तकें जन मानस को गहरे तक जाकर न केवल छू सकीं वरन् उन्हें साधना के लिए भी नई चेतना प्रदान करने में समर्थ रहीं।

ऐसा सब कुछ संभव होने में हमें कोई आश्चर्य नहीं रहा क्योंकि न केवल इन पुस्तकों के वरन् इन सभी शिष्यों के पीछे जो चैतन्य व्यक्तित्व है, जिनके ज्ञान और निर्देशन में इन सभी साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धि पायी है, और अनेक रोमांचक अनुभव प्राप्त किए हैं (और जो इन पुस्तकों का आधार बने) उनका नाम है डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी जो अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के रूप में विख्यात हैं।

एक ही व्यक्तित्व में ज्ञान की अनेक धाराएं समाहित देख कर वास्तव में आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व से जुड़ी सैकड़ों-हजारों, घटनाओं के आधार पर यदि उनके शिष्यों के अनुभव एकत्र किए जाएं तो वह एक विशाल ग्रंथ का आकार ले लेगा।

वर्तमान में हमने इसी विशाल ज्ञान-भंडार में से पाठकों की रुचि व हित को ध्यान में रखकर इस द्वितीय सेट का निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत

जगदम्बा साधना, सौंदर्य, शिव साधना, उर्वशी, स्वर्ण सिद्धि, तारा साधना, तंत्र साधना एवं हिप्नोटिज्म, शीर्षक से आठ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं।

अपने लघु-कलेवर में भी प्रत्येक पुस्तक सम्बन्धित विषय से पूर्ण ज्ञान समेटे ही है साथ ही अत्यंत सहज और बोधगम्य शैली में--

“जगदम्बा साधना” में भगवती दुर्गा से सम्बन्धित शक्ति साधनाएं गोपनीय रहस्यों के साथ प्रकाशित की गई हैं, जिनसे तो शास्त्र के ज्ञाता भी अनभिज्ञ होंगे, “सौन्दर्य” के अन्तर्गत जीवन में सौन्दर्य की आवश्यकता और प्राप्ति का प्रामाणिक विवरण “शिव साधना” के अन्तर्गत भगवान शिव से सम्बन्धित अत्यंत दुर्लभ साधनाएं, “उर्वशी” के अन्तर्गत अप्सरा का पूर्ण विवरण व साधना, “स्वर्ण सिद्धि” के अन्तर्गत स्वर्ण निर्माण से सम्बन्धित गोपनीय शास्त्रों का प्रकाशन, “तारा साधना” के अन्तर्गत धन प्राप्ति की अचूक साधना “तंत्र साधना” के अन्तर्गत जीवन को संवारने के कई दुर्लभ प्रयोग तथा “हिप्नोटिज्म” के अन्तर्गत सम्मोहन विज्ञान के

सफल सूत्र पूर्ण प्रामाणिकता से वर्णित किए गए हैं।

हमें आशा है कि प्रथम सेट की ही भांति यह
द्वितीय सेट भी पाठकों की रुचि के अनुकूल तथा
जीवन में लाभ प्रदान करने में समर्थ होगा।

-- प्रकाशक

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि

oooooooooooooooo

मैं एक सीधा-सादा, सरल
गायत्री उपासक रहा हूँ, मेरा छोटा सा कारोबार है,
गायत्री के प्रति मेरी अखण्ड आस्था रही है, और मैं ही
नहीं अपितु मेरे घर की दोनों पुत्रियाँ, पुत्र और पत्नी
भी गायत्री माँ के उपासक रहे हैं।

मैं नित्य इक्यावन मालाएं गायत्री मन्त्र की
फेरता, और इसके बाद ही अपनी दुकान पर जाता, परंतु
पिछले पांच वर्षों में मेरी आर्थिक स्थिति में कोई विशेष
अन्तर नहीं आया, यह अलग बात है, कि मैं कभी भूखा
नहीं रहा, परन्तु धीरे-धीरे व्यापार कमजोर पड़ने के
कारण निरंतर कर्जा होता गया, फलस्वरूप कुछ
व्यक्तियों ने मेरे ऊपर मुकदमें दायर कर दिये।

इस प्रकार पिछले साल-डेढ़ साल से मैं बहुत अधिक परेशान था, लगभग चार-पांच मुकदमे लोगों ने मेरे ऊपर कर दिये थे, इसके अलावा मेरे चाचा ने भी मकान से बेदखल करने के लिए मेरे ऊपर मुकदमा दायर कर दिया, फलस्वरूप मुझे मकान छोड़कर किराये के मकान में जाकर रहना पड़ा।

इस प्रकार मैं आर्थिक स्थिति से अत्यधिक कमजोर होता चला गया, और मेरे ऊपर कर्जे का बोझ बढ़ता गया, कुछ तो व्यापार की कमी के कारण और कुछ मुकदमे बाजी की वजह से मैं दिवालिया होने की स्थिति तक पहुंच गया।

इतना होने पर भी मेरी आस्था में कोई कमी नहीं आई और मैं उसी प्रकार से गायत्री मंत्र का जप करता रहा, परन्तु कभी-कभी मेरे मानस में एक दूसरा विचार भी आता कि इतना मंत्र जप करने के बावजूद भी मुझे क्या मिला? मेरी स्थिति में क्या सुधार हुआ? मैं कई-कई बार तो पूजा घर में रो-रो कर अपनी स्थिति मां गायत्री के सामने वर्णन करता, इससे कुछ क्षणों के लिए मेरा जी तो हल्का हो जाता, परन्तु स्थिति में कुछ भी अन्तर दिखाई नहीं पड़ा।

इन्हीं दिनों मेरी भेंट राम भाई से हुई और

उनके द्वारा गुरुदेव श्रीमाली जी के बारे में जानकारी मिली, रामभाई के साथ ही मैं जोधपुर जाकर उनसे मिला, मुझे वे सरल और सात्विक व्यक्ति नजर आये, मैंने उन्हें किसी भी प्रकार की कोई दक्षिणा या भेंट आदि नहीं दी, फिर भी वे इतने ही सरल निष्पृह और आत्मीय भाव से मुझे मिले, इन सबका मेरे चित्त पर बहुत गहरा और अच्छा असर पड़ा।

मैंने उन्हें सारी स्थिति स्पष्ट कर दी कि मैं गायत्री मां का उपासक हूँ, मेरी आस्था शक्ति-साधना में है, आप मुझे ऐसा मार्ग दिखाएं जो मेरे लिए उचित हो और जिस साधना को मैं कर सकूँ।

मैंने आगे बताया कि इतना अधिक मैंने गायत्री जप किया है, कि अब उस पर से मेरा विश्वास डोलने लगा है, मैंने अनुभव किया है, कि बिना किसी अन्य साधना के केवल गायत्री मंत्र जप से आज के युग में जीवन की पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।

उन्होंने मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुना और गायत्री उपासक के पक्ष या विपक्ष में कुछ भी नहीं कहा, इतना अवश्य बताया कि जीवन में गायत्री मंत्र जप का भी महत्व है, परन्तु तुम्हारे शरीर की बनावट और शारीरिक शक्तियों का पुंज इस प्रकार से है, कि तुम्हारे

शरीर में शक्ति का विशेष महत्व है, प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक साधना में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता, हर एक मानव के शरीर की बनावट और मानसिक ऊर्जा का सम्बन्ध अलग-अलग होता है, अतः उसी के अनुरूप साधना का चयन करना चाहिए। किसी के लिए शिव साधना सभी दृष्टियों से अनुकूल है, तो किसी अन्य के लिए राम की या भगवती दुर्गा की साधना अनुकूल हो सकती है, यह तो गुरु ही बता सकता है, कि तुम्हारे शरीर की संरचना का निर्माण किस प्रकार से है, और उसे किस प्रकार की साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे कि आप कम से कम प्रयास में पूर्णता प्राप्त कर सकें और जीवन में भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टियों से सफलता पा सकें।

आगे उन्होंने बताया कि आपको देखकर ऐसा प्रतीत होता है, कि आपके प्राणों की ऊर्जा जगदम्बा साधना के अनुकूल है, यदि आप मां भगवती दुर्गा जगदम्बा साधना करें तो आप अवश्य ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं, और उसमें पूर्णता प्राप्त कर भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विजय प्राप्त कर सकते हैं।

मेरे आगे पूछने पर उन्होंने मुझे दूसरे दिन आने के लिए कहा, जब मैं दूसरे दिन उनके निवास पर पहुंचा तो बहुत अधिक भीड़ थी, फिर भी कुछ समय

बाद मुझे उनसे मिलने का मौका मिल गया।

मिलते ही उन्होंने मुझे जगदम्बा साधना की विधि समझाई और मंत्र जप दिया, मुझे कहा कि आपको ज्यादा दिन यहां रहने की जरूरत नहीं है, आप- अपने निवास स्थान पर जाकर भी निष्ठा पूर्वक जिस प्रकार से मैंने आपको साधना बताई है, उस प्रकार से करने पर आपको मां भगवती के साक्षात् दर्शन प्राप्त हो सकते हैं, और आप - अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं।

मैं राम भाई के साथ पुनः अपने घर आ गया, और भगवती साधना के लिए तैयारी करने लगा। उन्होंने बताया था कि किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

मैं निश्चित दिन पर अपने पूजा स्थान में आसन बिछाकर बैठ गया, स्नान कर सफेद धोती मैंने पहिन ली थी, और एक सफेद धोती कंधों पर ओढ़ ली थी। सामने लकड़ी का एक बाजोट बिछाकर उस पर लाल कपड़ा बिछा दिया था, और जगदम्बा का सिंहवाहिनी रूप युक्त चित्र व यन्त्र उस पर स्थापित कर दिया था, उसके सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा लिया और अगरबत्ती भी लगा दी।

जोधपुर से आते समय मैं उनसे गुरु मंत्र लेकर

शिष्य बन गया था, अतः दाहिनी ओर उनका चित्र स्थापित कर दिया और उनके सामने ही एक अगरबत्ती और दीपक लगा दिया, मुझे बताया गया था कि मूंगे की माला से या स्फटिक माला से मंत्र जप किया जाय, तो निश्चय ही कार्य सिद्धि में सफलता प्राप्त होती है।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न करना ज्यादा अनुकूल माना गया है, अतः रात्रि के नौ बजे से मैं आसन पर बैठ गया था, मेरा मुंह पूर्व की तरफ था, सामने भव्य जगदम्बा का चित्र रखा हुआ था, दाहिनी ओर गुरुजी का चित्र स्थापित था, और मेरे बाईं ओर मैंने कार्य सिद्धि के लिए गणपति को स्थापित कर दिया था।

इसके अलावा शुद्ध जल का लोटा, पुष्प, केसर, एवं भोग भी रख दिया गया था, सबसे पहले मैंने निम्न मंत्र से मां भगवती की पूजा की और उन्हें केसर लगाकर फूलों का हार पहनाया तथा भोग लगाया।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते । ।

पूजा समाप्त कर दाहिने हाथ में जल लेकर मैंने संकल्प किया मैं अमुक गोत्र, पिता का पुत्र, मैं आपको प्रसन्न कर आपके दर्शन की कामना हेतु यह प्रयोग प्रारम्भ कर रहा हूँ।

इसके बाद मैंने गुरुजी के बताये हुए तरीके से संसार प्रसिद्ध “नवार्ण मंत्र” की एक माला फेरी।

“ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।”

इसमें नौ अक्षर होते हैं, अतः मंत्र से पूर्व ॐ नहीं लगाना चाहिए, नवार्ण मंत्र का जप करने के बाद मैंने गुरुजी के बताये हुए निम्न मंत्र की एक सौ एक मालाएं सम्पन्न की।

मंत्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

जब एक सौ एक मालाएं पूरी कर चुका तो उठकर अपने स्थान पर जाकर सो गया, इस साधना में जमीन पर सोना, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना, एक समय सात्विक भोजन करना आवश्यक है, इसके अलावा कुल पांच लाख मंत्र जप से यह साधना सिद्ध हो जाती है।

मैं नियमपूर्वक इस प्रयोग को सम्पन्न करता रहा प्रत्येक दिन मुझ में विशेष उत्साह और उमंग की अनुभूति होती और मुझे ऐसा लगता कि मैं अवश्य ही अपने उद्देश्य में सफलता पा लूंगा।

पांचवें रोज जब मैं रात्रि को नौ बजे मंत्र जप

समाप्त कर सोया तो स्पष्ट रूप से स्वप्न में मुझे सिंह के दर्शन हुए, विशाल और सौम्य सिंह, जिसकी गर्दन के बाल दोनों तरफ झूल रहे थे, और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मां भगवती का ही दूत आया हो।

स्वप्न में ऐसा लग रहा था कि मैं साधना में बैठा हूँ, और सामने शेर खड़ा है तथा मनुष्य की आवाज में कह रहा है, कि तुम सही रास्ते पर चल रहे हो, परन्तु जब तक साधना पूरी नहीं हो जाए, तब तक दुकान पर न जाओ, क्योंकि व्यापारिक कार्य करने से, चाहते और न चाहते हुए भी असत्य बोलना पड़ता है, और इससे 'जिह्वा दोष' लगता है, कल से तुम दुकान पर नहीं जाओगे और भूल करके भी साधना समाप्ति तक असत्य भाषण नहीं करोगे।

ऐसा कहकर शेर अपनी पूँछ का झपट्टा मेरे शरीर पर देकर मुड़ गया और एकदम से मेरी आँख खुल गई, मुझे वह दृश्य, शरीर पर शेर की पूँछ का झपट्टा बराबर अनुभव हो रहा था, मैंने अनुभव किया कि वास्तव में ही मुझे सही संकेत मिला है, इसके बाद मुझे नींद आई ही नहीं, और मैं स्नान कर पुनः पूजा में बैठ गया।

दूसरे दिन मैंने दुकान पर जाना बन्द कर दिया,

अधिकतर घर पर ही रहता और बहुत ही कम लोगों से भेंट करता, जिससे कि मेरे मुँह से कोई असत्य बात न निकले।

प्रातःकाल होने पर भी मैं उस स्वप्न को भूला नहीं और मैंने जोधपुर गुरुजी को टेलिफोन लगाया तो एक घंटे बाद टेलिफोन लगा, त्योंही गुरुजी ने कहा तुम्हें कल रात को स्वप्न में जगदम्बा के वाहन सिंह ने जो मार्गदर्शन किया है, उसी प्रकार से साधना सम्पन्न करते रहो, तुम सही रास्ते पर चल रहे हो, और इसके आगे के शब्द व्यवधान के कारण न तो मैं सुन सका और न मैं अपनी बात कह सका, परन्तु मैं आश्चर्य कर रहा था कि मेरे बिना कुछ कहे ही गुरुजी को मेरे स्वप्न के बारे में किस प्रकार से ज्ञान हो गया।

मैं मन में पुलकित था कि मुझे भगवती के गण के साक्षात् दर्शन हुए हैं, और टेलिफोन पर भी गुरुजी की ध्वनि सुनने को मिली है, मैं उसी उत्साह से साधना में लगा रहा।

इस प्रकार दस दिन बीत गये, मेरा अधिकतर समय पूजा कक्ष में ही बीतता, ग्यारहवीं रात्रि को मैं पूजा कक्ष में बैठा हुआ था, और मेरा मंत्र जप अनवरत रूप से चालू था।

रात्रि को लगभग दो बजे अचानक ऐसा लगा

जैसे मेरे सीने पर जोरों से धक्का लगा हो, मेरे हाथों से माला गिरते-गिरते बची, पूरा कमरा दूधिया प्रकाश से भर गया, मैं एक क्षण के लिए तो अचकचा गया, कि यह क्या हो गया है, मेरी आंखें पूरी तरह से खुल नहीं पा रही थीं, पर जब एक-दो मिनट के बाद आंखें खुलीं तो मेरे सामने सिंह पर बैठी हुई मां जगदम्बा साक्षात् सौम्य रूप में उपस्थित थीं, उनका कान्तियुक्त चेहरा मंद मंद मुस्कुरा रहा था, शेर अपलक नयनों से मेरी ओर ताक रहा था, और पूरे कमरे में एक विशेष प्रकार की सुगन्ध व्याप्त हो गई थी।

यह दृश्य लगभग दो या तीन मिनट रहा, मेरा गला भर आया, मुंह से प्रयत्न करने पर भी कुछ शब्द निकल नहीं पा रहे थे, फिर भी मेरे मुंह से इतना ही निकला - “रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि” और ये शब्द निकलते ही मां के हाथों में जो माला थी, वह उन्होंने मेरी तरफ फेंक दी, और दूसरे ही क्षण वह दृश्य अन्तर्धान हो गया।

यह सारा दृश्य, यह सारी घटना मात्र तीन या चार मिनटों में ही घटित हो गई, परन्तु ये तीन-चार मिनट ही मेरे पूरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण क्षण थे, दृश्य समाप्त होते ही मैं अपनी स्थिति में आ गया और

अपने शरीर पर नजर डाली तो मेरे दाहिने हाथ में पकड़ी हुई माला इसी प्रकार से चल रही थी, सामने दीपक लग रहा था, और भगवती दुर्गा का चित्र मेरे सामने ही स्थापित था, मेरी आंखों से जलधार बह रही थी, और मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा था।

परन्तु मां जगदम्बा की दी हुई माला मेरी गोदी में पड़ी थी, जो कि घटित घटना की साक्षी थी, मेरा मंत्र जप कुछ ही समय का बाकी था, मैंने मंत्र जप पूरा किया और मां के चित्र के सामने साष्टांग दण्डवत् लेट गया, सारा शरीर धरधरा रहा था, आंखों से प्रसन्नता के आंसू बह रहे थे, गला भर गया था, हृदय गद्गद हो रहा था, और मेरी आंखें मां के चरणों पर टिकी हुई थीं।

कितनी देर तक मैं इसी प्रकार से उनके चरणों में पड़ा रहा, कुछ नहीं कह सकता, परन्तु वे क्षण मेरे लिए अद्वितीय थे, लगभग एक घण्टे भर बाद मैं उठा और दिव्य माला मां के चित्र को पहना दी।

इस समय तक प्रातः के लगभग पांच बज गये थे, मैंने अपने पूरे परिवार को जगाया, प्रसन्नता के मारे मेरे पांच जमीन पर टिक नहीं पा रहे थे, जल्दी-जल्दी सभी पविार के लोग स्नान आदि कर पूजा कक्ष में आये तो सभी ने महसूस किया कि वह कमरा एक विशेष सुगन्ध से

पूरित है। दिव्य माला को देखकर सभी भाव-विभोर हो गये।

एक हजार से भी अधिक मेरे परिचितों और प्रांत के महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने उस दिव्य माला के दर्शन किये, वे निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि यह माला किस से बनी हुई है, और ये फूल किस प्रकार के हैं, तीन महीने बीतने पर भी वे फूल मुरझाये नहीं, और माला से बराबर सुगन्ध प्रवाहित होती रही।

आश्चर्य की बात यह है कि जो भी व्यक्ति मेरे पूजा कक्ष में जाता है, तो माला पर दृष्टि पड़ते ही अपने-आप उसका ध्यान लग जाता है, और यह स्थिति लगभग एक दो मिनट तक रहती है, आंख खोलने पर उसके मुंह से निकलता है, "जीवन में पहली बार अखण्ड आनन्द एवं शांति की अनुभूति हुई है"।

देश के कई उच्च-कोटि के साधु-संतों ने भी उस माला के दर्शन किए हैं, और भाव-विभोर हो गये हैं, प्रसिद्ध संत प्रेम जी बापू तो उस सुगंध को अनुभव करते ही चैतन्य की तरह भाव समाधि में चले गये, और तीन घण्टे तक समाधिवस्था में बने रहे।

आश्चर्य की बात यह भी है, कि जिस रात्रि को मुझे मां जगदम्बा के दर्शन हुए, दूसरे दिन प्रातःकाल ही

गुरुजी का टेलिग्राम मिल गया था, जिसमें लिखा है -- साधना में सफलता एवं जगदम्बा दर्शन हेतु आशीर्वाद।

यह टेलिग्राम भी पूजा कक्ष में सुरक्षित है, और आज भी मैं जब पूजा कक्ष में जाता हूँ, तो भाव-विभोर हों जाता हूँ, कहना न होगा, कि इन तीन महीनों में मेरा व्यापार काफी बढ़ा है, और आश्चर्य तो यह है कि मेरे सभी मुकदमें सामने वाली पार्टियों ने स्वतः ही उठा लिए हैं।

वास्तव में, मैं अपने जीवन को धन्य समझने लगा हूँ, कि गुरु कृपा से मुझे मां के साक्षात् दर्शन हो सके, मेरा रोम-रोम इनके प्रति नमन है।

★ ★ ★

दुर्गा सप्तशती

से

संबंधित गोपनीय तथ्य

दुर्गा सप्तशती भारतवर्ष का एक प्रामाणिक और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, दुर्गा को आदि शक्ति कहा गया है, आदि शक्ति दुर्गा, महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में त्रिधा रूप युक्त है। यही शक्ति अखिल ब्रह्माण्ड की प्रसवित्री कही गयी है।

कलियुग में दुर्गा और गणेश को प्रत्यक्ष और प्रधान देवता माना गया है, 'कलौ चण्डी विनायकौ, के अनुसार कलियुग में मात्र ये दो देवता ही प्रत्यक्ष प्रधान और महत्वपूर्ण हैं। आज समस्त पृथ्वी तल पर दुर्गा की विविध रूपों में उपासना आदि प्रचलित है, जो भी साधक या गृहस्थ, श्रद्धा, भक्ति से दुर्गा का पाठ, हवन, पूजा, स्मरण

आदि करते हैं, उनके समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं, फिर भी साधकों को चाहिए कि वे इसके पाठ के समय सम्बन्धित तथ्यों का पूरी तरह से पालन करें।

इस लेख में, मैं दुर्गा से संबंधित सभी तथ्य स्पष्ट नहीं कर सकूंगा, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण एवं गोपनीय तथ्यों की ओर इंगित कर रहा हूँ, जिनका पालन करना आवश्यक माना गया है।

पुस्तक-पूजा

पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व पंचोपचार पद्धति से पुस्तक पूजा निम्न मंत्र से करनी चाहिए—

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्म ताम् ॥

शापोद्धार

इसके बाद योनि-मुद्रा का प्रदर्शन करके दुर्गा को प्रणाम करना चाहिए और पुस्तक की स्थापना करके निम्न मंत्र से शापोद्धार किया जाना आवश्यक है।

इस मंत्र का आदि और अन्त में सात बार जप करना चाहिए --

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं क्रीं चण्डिकादेव्यै

शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा ।

उत्कीलन मंत्र

शापोद्धार के बाद उत्कीलन मंत्र का जप, आदि में और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार किया जाता है, उत्कीलन मंत्र इस प्रकार है --

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं
कुरु कुरु स्वाहा ।

मृत संजीवनी-विद्या

उत्कीलन मंत्र के बाद मृत संजीवनी - विद्या का जप प्रारम्भ में और अन्त में सात-सात बार करना आवश्यक माना गया है, मृत संजीवनी विद्या मंत्र इस प्रकार है --

ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृत संजीवनि विद्ये
मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ।

शाप-विमोचन

“मारीच कल्प” के अनुसार सप्तशती शाप विमोचन मंत्र इस प्रकार है ।

ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हुं ॐ ऐं क्षोभय मोहय
उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं ।

इस मंत्र का प्रारम्भ में ही १०८ बार जप कर लेना चाहिए, पाठ की समाप्ति पर इस मंत्र का जप नहीं किया जाता ।

दुर्गा पाठ से संबंधित गोपनीय तथ्य

१. कहा गया है कि यदि दुर्गा पाठ में एक भी त्रुटि रह जाती है, तो पूरा चण्डी पाठ व्यर्थ हो जाता है ।

एवं मंत्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ।

आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः । ।

२. दुर्गा सप्तशती के पाठ से पूर्व कवच, अर्गला तथा कीलक का क्रमशः पाठ होना चाहिए, यों दुर्गा सप्तशती के छः अंग हैं- कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य, ये ही सप्तशती के छः अंग हैं, अतः दुर्गा सप्तशती के मूल पाठ से पूर्व कवच, अर्गला और कीलक का पाठ होना ही चाहिए तथा दुर्गा सप्तशती के पाठ के अन्त में तीनों रहस्यों का पाठ आवश्यक माना गया है ।

अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत् ।

कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत्त्रयं पठेत् । ।

३. यदि दुर्गा सप्तशती के एक ही दिन में कई पाठ करने हों, तो कवच, अर्गला और कीलक का एक ही बार पाठ करना चाहिए, बार-बार नहीं ।

४. दुर्गा सप्तशती के पाठ के अन्त में तीनों रहस्यों का पाठ

आवश्यक माना गया है।

५. दुर्गा पाठ के प्रारम्भ में और दुर्गा पाठ के अन्त में १०८ बार 'नवार्ण-मंत्र' का उच्चारण अत्यन्त आवश्यक माना गया है, यदि दिन में एक से अधिक बार दुर्गा सप्तशती के पाठ किये जाएं तब भी पाठ के प्रारम्भ में और अन्त में नवार्ण मंत्र का जप आवश्यक माना गया है।

६. दुर्गा के प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ में रात्रि सूक्त और अन्त में देवी सूक्त का पाठ करना आवश्यक है।

७. दुर्गा पाठ करते समय अध्याय के अन्त में 'इति' कहने से लक्ष्मी का नाश, 'वध' कहने से कुल का नाश और 'अध्याय' कहने से अपने प्राण का नाश होता है।

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीं वधः कुलविनाशकः ।

अध्यायो हरते प्राणान् मार्कण्डेयादिकं वदेत् । ।

८. इसलिए अध्याय के अन्त में निम्न प्रकार से उच्चारण करना चाहिए—

ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे

देवीमाहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्यकामाः)

जगदम्बार्पणमस्तु । ।

९. दुर्गा पाठ करते समय अध्याय के मध्य में विराम नहीं करना चाहिए, यदि किसी कारणवश विराम करना हो तो पुनः उस अध्याय का प्रारम्भ से ही पाठ करना चाहिए।

१०. दुर्गा पाठ करते समय अपने हाथ में दुर्गा की पुस्तक नहीं रखनी चाहिए, अपितु पृथ्वी पर आसन बिछा कर उस पर दुर्गा की पुस्तक रख कर पाठ करना चाहिए, पाठ करते समय अपना सिर नहीं हिलाना चाहिए।

११. दुर्गा पाठ मन ही मन नहीं किया जाता, अपितु उच्चारण करके ही पाठ करना चाहिए।

१२. जो मनुष्य प्रतिदिन दुर्गा का पाठ करता है, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती।

१३. यज्ञ के समय प्रत्येक अध्याय के अन्त में उल्टे नागरवेल के पान पर साकल्य, एक कमल गट्टा घी में भिगोकर, एक सुपारी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गूल, शहद, ये सब चीजें श्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से यज्ञ में समर्पित करनी चाहिए --

ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय

स्वाहा व्यानाय स्वाहा समानाय स्वाहा ।

अम्बे अम्बिकेम्बालिके नमानयति कश्चनः ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रि कां कां पीलवासिनीं स्वाहा

१४. इसके बाद श्रुव में घृत लेकर निम्न मंत्र को बोलकर अग्नि में समर्पित करना चाहिए --

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतव्वसाँ पावानः

पिवत अन्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा दिशः प्रदिश

आदिशो विदिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।।

१५. प्रत्येक मंत्र की तांत्रिक आहुति अलग-अलग है, और यह गोपनीय है, पाठकों के लाभार्थ, मैं प्रत्येक अध्याय के अंत में जो तांत्रिक आहुति दी जाती है, वह स्पष्ट कर रहा हूँ --

इसमें भी श्रुति में उपरोक्त सामान लेकर खड़े होकर, संबंधित मंत्र पढ़ते हुए हवन सामग्री यज्ञ कुण्ड में समर्पित कर देनी चाहिए।

प्रथम अध्याय के अंत में --

ॐ सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै
सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यै महाकालिकायै महाहुतिं
समर्पयामि नमः

दूसरे अध्याय के अंत में --

हीं-सांगाये सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै
श्री महालक्ष्म्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै
नमः महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा ।।

तीसरे अध्याय के अंत में-

ॐ जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै
महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

चौथे अध्याय के अंत में-

हीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै
सवाहनायै श्री महालक्ष्म्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी
बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

पांचवे अध्याय के अंत में-

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णुमायादि
चतुर्विंशदेवताभ्यो महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा

षष्ठाध्याय के अंत में-

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै शताक्ष्यै धूम्रलोचनायै
महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

सप्तमाध्याय के अंत में-

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै काली चामुण्डादेव्यै
कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

अष्टमाध्याय के अंत में-

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै रक्ताक्ष्यै अष्ट मातृ
सहितायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

नवमाध्याय के अन्त में -

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै
महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

दशमाध्याय के अन्त में -

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै त्रिशूल पाशधारिण्यै
महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

एकादशाध्याय के अन्त में -

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै
गरुड वाहिनी नारायणि देव्यै
महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

द्वादशाध्याय के अन्त में -

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै बाला त्रिपुर सुन्दर्यै
वर प्रदायै वैष्णवी देव्यै महाहुतिं
समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

त्रयोदशाध्याय के अन्त में -

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै
श्री विद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥

१६- विशेष आहुति -

दुर्गा सप्तशती के पाठ के मध्य में भी विशेष आहुति दी जाती है, जो कि यज्ञ करते समय आवश्यक मानी गई है।

ये मंत्र और आहुतियां निम्न प्रकार से हैं --

१- क्षीरोदश्चामलं हारमंजरे च तथाम्बरे ।
चूड़ामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥

हवन सामग्री-चूड़ामणि
२- अददज्जलधिस्तस्यै पंकजं चातिशोभनम् ।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥

हवन सामग्री-कमलगट्टा
३- देव्यागणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः ।
यथैषां तुष्टुसुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥

हवन सामग्री-गुलाब पुष्प
४- गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवता ॥
हवन सामग्री-शहद

५- अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानौ महासुरैः ।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः

हवन सामग्री-गूगल

६- अध्याय चार में, श्लोक २४ से २७ तक के मंत्रों का उच्चारण करते समय आहुति नहीं देनी चाहिए परन्तु २८ वें मंत्र का अलग से चार बार उच्चारण करके उसकी चार आहुतियां देनी चाहिए ।

७- एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ।
अर्चितां जगतां धात्रीं तथा गन्धानुलेपनैः । ।

हवन सामग्री-सुगन्धित धूप

८- अध्याय ११ के सभी मंत्रों की आहुति क्षीर से दी जाती है ।

५- असुरासृग्वसापंकवर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वानता वयम् । ।

हवन सामग्री-गिलोय

९- रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वमाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति । ।

हवन सामग्री-पीली सरसों

१०- सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् । ।

हवन सामग्री-काली मिर्च

११- ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवा ।
स्तुवन्तो व्योहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् । ।

हवन सामग्री-मजीठ

अलग-अलग मंत्रों से इसके अलावा भी विशेष सामग्री की आहुतियां देने का विधान है । इस प्रकार की आहुति देते समय यजमान को चाहिए कि वह उठकर अपने श्रुव में सम्बन्धित सामग्री लेकर मंत्रोच्चारण करता हुआ वह यज्ञ कुण्ड में समर्पित कर दे ।

वस्तुतः दुर्गा सप्तशती ग्रन्थ अत्यन्त रहस्यमय, गोपनीय और महत्वपूर्ण है, यदि इसके पूर्ण विधि-विधान को लिखा जाए तो बहुत बड़ा ग्रन्थ तैयार हो सकता है, फिर कभी मुझे अवसर मिला, तो मैं इससे सम्बन्धित कई गोपनीय तथ्य पाठकों के सामने स्पष्ट करूंगा ।

★ ★ ★

दुर्गा सिद्धि सम्पुट मंत्र

दुर्गा सप्तशती तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में अत्यन्त श्रेष्ठ प्रभावपूर्ण पाठ है, जिसके पाठ मात्र से ही समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। दुर्गा सप्तशती अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है, जो पुरुष जिस भाव और जिस कामना से श्रद्धा एवं विधि के साथ दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है, उसे उसी भावना और कामना के अनुसार निश्चय ही फल सिद्धि प्राप्त होती है, इस बात का अनुभव अगणित पुरुष-स्त्रियों को प्रत्यक्ष हो चुका है।

नवरात्रि में यदि इन मंत्रों का उपयोग किया जाय तो निश्चय ही सफलता मिलती है।

दुर्गा सप्तशती में से कुछ चुने हुए मंत्रों का उल्लेख यहां किया जा रहा है, जो विविध कामनाओं से युक्त है। इनका प्रयोग दो

प्रकार से होता है पहला, दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के साथ सम्पुट लगाकर तथा दूसरा, सीधे ही संबंधित मंत्र की नित्य पांच मालाएं फेर कर।

मुझे विश्वास है, साधक गण इस अवसर का लाभ उठायेंगे . . .

(१) सामूहिक कल्याण के लिए

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः । ।

(२) अशुभ तथा भय का विनाश करने के लिए

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चंडिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु । ।

(३) विश्व की रक्षा के लिए

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भुवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् । ।

(४) विश्व के अभ्युदय के लिए

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
 विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
 विश्वेषुवन्द्या भवती भवन्ति
 विश्वाश्रया यं त्वयि भक्तिनभ्राः । ।

(५) विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिये

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
 प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
 प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
 त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य । ।

(६) विश्व के पाप-ताप-निवारण के लिए

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते
 नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
 पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
 उत्पातपाकजनिताश्च महोपसर्गान् ।

(७) विपत्ति नाश के लिए

शरणागत दीनार्त परित्राणपरायणे ।
 सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते । ।

(८) विपत्तिनाश और शुभ की प्राप्ति के लिए

करोतु सा नः शुभहेतु मीश्वरि
 शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।

(९) भय-नाश के लिए

(क) सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
 भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते । ।
 (ख) एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
 पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते । ।
 (ग) ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुर सूदनम् ।
 त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते । ।

(१०) पाप-नाश के लिए

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
 सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योनः सुतानिवः । ।

(११) रोग-नाश के लिए

H

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
 रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
 त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
 त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति । ।

(१२) महामारी-नाश के लिए

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।।

(१३) आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति के लिए

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

(१४) सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिए

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारमसागरस्य कुलोद्भवाम् ।।

(१५) बाधा-शान्ति के लिए

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।।

(१६) सर्वविध अभ्युदय के लिए

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना

(१७) दारिद्र्यदुःखादिनाश के लिए

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्र चित्ता ।।

(१८) रक्षा-पाने के लिए

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।।

(१९) समस्त विद्याओं की और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति के लिए

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रिया समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ।।

(२०) सब प्रकार के कल्याण के लिए

सर्व मंगल मांगलये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरणे त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

(२२) प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलाक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भभः । ।

(२३) विविध उपद्रवों से बचने के लिए

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् । ।

(२४) बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादि प्राप्ति के लिए

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः । ।

(२५) भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति के लिए

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि । ।

(२६) पाप नाश तथा भक्ति की प्राप्ति के लिए

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहा ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि । ।

(२७) स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए

सर्वभूता यदा देवि स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः । ।

(२८) स्वर्ग और मुक्ति के लिए

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते । ।

(२९) मोक्ष की प्राप्ति के लिए

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः । ।

(३०) स्वप्न में सिद्धि-असिद्धि जानने के लिए

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय । ।

★★★

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥

मां ! मैं न मंत्र जानता हूँ, न यंत्र, अहो! मुझे
स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है, न
ध्यान का। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है,
न तो तुम्हारी मुद्रायें जानता हूँ, और न मुझे व्याकुल
होकर विलाप करना ही आता है, परन्तु एक बात जानता
हूँ केवल तुम्हारा अनुसरण, तुम्हारे पीछे चलना। जो कि
सब क्लेशों को, समस्त दुःख विपत्तियों को हर लेने वाला
है ॥ १ ॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

सबका उद्धार करने वाली कल्याणमयी माता। मैं पूजा
की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का भी अभाव है, मैं स्वभाव
से भी आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन हो
भी नहीं सकता, इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में
जो त्रुटि हो गई है, इसे क्षमा करना, क्योंकि कुपुत्र का होना
सम्भव है, किंतु कभी भी माता कुमाता नहीं होती ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥

मां! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो
बहुत से हैं, किन्तु उन सब में मैं ही अत्यन्त चपल तुम्हारा
बालक हूँ, मेरे जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे!
मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिए कदापि उचित
नहीं है, क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु
कहीं भी माता कुमाता नहीं होती ॥ ३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरण सेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति । । ४ । ।

जगदम्ब मातः ! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की, देवि! तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया, तथापि मुझ जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो, इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है, किंतु कहीं भी माता कुमाता नहीं होती । । ४ । ।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् । । ५ । ।

गणेश जी को जन्म देने वाली माता पार्वती! मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पच्चासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है, अब उनकी पूजा मुझसे नहीं हो पाती, अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है, इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्ब रहित होकर किस की शरण में जाऊँगा? । । ५ । ।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ । । ६ । ।

माता अपर्णा! तुम्हारे मंत्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाए तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दरिद्री मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं, उनके जप से प्राप्त होने वाला उत्तम फल कैसा होगा? इसको कौन मनुष्य जान सकता है । । ६ । ।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् । । ७ । ।

भवानी! जो अपने अंगों में चिता की राख, भभूत तपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बर धारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकि को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल

(भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एक मात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं इसका क्या कारण है? यह महत्व उन्हें कैसे मिला, यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है, तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्व बढ़ गया । । ७ । ।

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभवाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः । । ८ । ।

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली मां! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की अभिलाषा भी नहीं है, न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा, तुझसे मेरी यही याचना है कि मेरा जीवन 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, भवानी' इन नामों का जप करते हुए बीते । । ८ । ।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव । । ९ । ।

मां श्यामा! नाना प्रकार की पूजन सामग्रियों से कभी

विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझ से न हो सकी, सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन सा अपराध नहीं किया है? फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपा दृष्टि रखती हो, मां! यह तुम्हारे ही योग्य है, तुम्हारी जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है । । ९ । ।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणासिन्धु ।
नैतच्छब्दं न न शब्देभ्यः
सुधातृणां जननीं स्मरन्ति । । १० । ।

माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ (पहले कभी नहीं करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना, क्योंकि भूख, प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते हैं । । १० । ।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं न हि
माता समुपेक्षते सुतम् । । ११ । ।

जगदम्ब! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, पुत्र अपराध पर अपराध क्यों न करता जाँता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती । । ११ । ।

मत्समः पातकी नास्ति पापधनी त्वत्समा न हि ।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु । । १२ । ।

महादेवि! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है, ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े, वह करो । । १२ । ।

★★★

जीवन को पूर्णता तक ले जाने में समर्थ हैं ये प्रामाणिक पुस्तकें

१. गुरु सूत्र	२०/-
२. निखिलेश्वरानन्द रहस्य	३०/-
३. मुहूर्त ज्योतिष	३०/-
४. हिमालय का सिद्ध योगी	३५/-
५. स्वर्ण तंत्रम्	३०/-
६. भौतिक सफलता साधना एवं सिद्धियां	३०/-
७. लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग	३०/-
८. महालक्ष्मी, सिद्धि एवं साधना	३०/-
९. विश्व की अलौकिक साधनाएं	३०/-

अपने निकटतम बुक स्टॉल से खरीदे

न मिलने पर लिखें

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन-०२६१३२२०६